


क्लाउड सीडिंग से वर्षा की कमी होगी पूरी

संजीव गुप्ता • जागरण

नई दिल्ली : जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग का दुष्प्रभाव मौसम चक्र को प्रभावित करने के साथ वर्षा पैटर्न को भी बदल रहा है। मात्रा के लिहाज से भले ही अब भी साल भर में और मानसून के दौरान सामान्य वर्षा हो रही हो, लेकिन उसका वितरण असमान हो गया है। कहीं वर्षा अधिक होती है, तो कहीं हल्की रह जाती है। कहीं भूजल के स्तर में कोई सुधार नहीं होता और कहीं यह पानी व्यर्थ बह जाता है। कृषि जगत के लिए भी समस्या उत्पन्न हो गई है। भविष्य में इस समस्या के गंभीर होने की आशंका को ध्यान में रखते हुए ही मौसम विभाग क्लाउड सीडिंग तकनीक पर काम करने की तैयारी कर रहा है।

मौसम विभाग का लक्ष्य अत्याधुनिक निगरानी तकनीक एवं सिस्टम विकसित करके हाइ रिजोल्यूशन वायुमंडलीय निगरानी, रडार और उपग्रहों के साथ उच्च

- आइआइटीएम पुणे में विभाग स्थापित कर रहा क्लाउड चैंबर
- बादलों पर होगी रिसर्च, नमी, हवा की गति का होगा आकलन

 क्लाउड सीडिंग तकनीक पर आइआइटीएम पुणे काम कर रहा है। फिलहाल उपकरणों की खरीद प्रक्रिया चल रही है।

- डा मृत्युंजय महापात्र, महानिदेशक, भारत मौसम विज्ञान विभाग

क्षमता वाले कंप्यूटरों के जरिये उच्चस्तरीय क्षमताओं को हासिल करना है। इस माध्यम से मौसमी घटनाओं को प्रबंधित करने का भी प्रयास रहेगा, जैसे मांग के अनुसार वर्षा, ओले, कोहरा बढ़ाना या घटाना और बिजली गिरने की घटनाओं को नियंत्रित करना। इसके लिए क्लाउड फिजिक्स में अनुसंधान को मजबूत करना सबसे महत्वपूर्ण है। इसके लिए मौसम विभाग की रिसर्च विंग पुणे में स्थित आइआइटीएम में एक

क्लाउड चैंबर स्थापित किया जा रहा है। चैंबर में बादलों पर शोध होगा।

मौसम विज्ञानियों का कहना है कि बादल का बेस आमतौर पर धरती की सतह से एक से डेढ़ किमी दूर तक होता है, लेकिन इनकी ऊंचाई 12 से 13 किमी तक हो सकती है। अब देश को बादलों की ऊंचाई पर हो रहे बदलावों के लिए तैयार किया जाएगा। इसमें नमी, हवाओं की गति व तापमान का आकलन होगा। बादलों के घनत्व को कम करने के लिए अधिक वर्षा वाले बादलों को ऐसे इलाकों की ओर भेजने की कोशिश होगी, जहां वर्षा कम हो रही है। विज्ञानियों ने बताया कि साल दर साल वर्षा के पैटर्न में बदलाव आया है। इससे निपटने की तैयारी है। दूसरे चरण में बिजली गिरने की समस्या से निपटने पर काम होगा। इसमें बादलों से जमीन में गिरने वाली बिजली को बादल से बादल पर शिफ्ट करने पर शोध होंगे। दूसरे चरण में फाग की समस्या से निपटने पर भी शोध होगा।